

डॉ. डेविड डिसिल्वा , अपोक्रीफा, व्याख्यान 6, एक नज़दीकी नज़र: सुलैमान की बुद्धि, ग्रीक एस्तेर, तीसरा मैकाबीज़.

© 2024 डेविड डिसिल्वा और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डेविड डिसिल्वा द्वारा अपोक्रीफा पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 6 है, एक नज़दीकी नज़र, सुलैमान की बुद्धि, ग्रीक एस्तेर, तीसरा मैकाबीज़।

तथाकथित सुलैमान की बुद्धि एक गुमनाम रचना है, हालाँकि अध्याय 6 से 9 को सुलैमान के दृष्टिकोण से लिखा गया है।

सुलैमान, बेशक, इज़राइल में ऋषियों का संरक्षक संत था, इसलिए ज्ञान और निर्देश की परंपरा में कई कार्यों का श्रेय उसे दिया जाता है, और इस मामले में, ऐसा लगता है कि यह उसके द्वारा लिखा गया है। लेकिन सुलैमान की बुद्धि ग्रीक में लिखी गई थी, संभवतः मिस्र में, और इसलिए संभवतः अलेक्जेंड्रिया में, जो एक विशाल यहूदी प्रवासी समुदाय का घर था, शायद युग के मोड़ के समय दस लाख से अधिक यहूदी थे। कुछ चीजें जो विशेष रूप से मिस्र की उत्पत्ति की ओर इशारा करती हैं, वे पुस्तक में मिस्रियों के प्रति शत्रुता होगी, साथ ही मूर्तिपूजा के साथ-साथ जानवरों की पूजा की निंदा भी होगी क्योंकि मिस्र वास्तव में एक प्रमुख स्थान था जहाँ कोई जानवर को देवता के अवतार के रूप में पा सकता था न कि केवल बेजान मूर्तियों के रूप में।

यह संभवतः रोमन शासन के आरंभिक काल में लिखा गया था, इसलिए युग के मोड़ के आसपास, कुछ दशक ईसा पूर्व, कुछ दशक ईस्वी, यह विवादित है। यह कार्य तीन प्रमुख खंडों में आता है। पहले खंड में, जो अध्याय 1 से 5 तक है, प्रवचन का ध्यान दुष्टों द्वारा धर्मी लोगों के उत्पीड़न पर है।

और अंततः ईश्वर का हस्तक्षेप धर्मी लोगों को सही साबित करने और दुष्टों को दंडित करने के लिए। दूसरा भाग फिर स्पष्ट रूप से अलग है। अध्याय 6 और 9 के बीच, हमारे पास प्रार्थना और बुद्धि की प्रकृति पर एक तरह का प्रवचन है, जहाँ अब हमें सुलैमान की बुद्धि के लिए प्रार्थना की यादें मिलती हैं, जैसा कि विहित शास्त्रों की ऐतिहासिक पुस्तकों से जाना जाता है।

फिर, अध्याय 10 से शुरू होकर पुस्तक के अंत तक, लेखक तीसरा मोड़ लेता है। और यहाँ, इस तीसरे खंड में, जो कि पूरे खंड का सबसे बड़ा खंड है, वह मूर्तिपूजकों के लिए ईश्वर के न्याय पर एक प्रवचन में शामिल होता है, विशेष रूप से मिस्रियों पर आई विपत्तियों की बाइबिल की कहानी को फिर से सुनाने के माध्यम से। हालाँकि, निर्गमन के उस पुनर्कथन के बीच में कुछ महत्वपूर्ण भ्रमण हैं।

जैसा कि मैंने कहा, पुस्तक का पहला भाग अधर्मी व्यक्ति की मानसिकता और अधर्मी व्यक्ति तथा धार्मिक व्यक्ति के बीच तनाव, शत्रुता और विरोध को देखता है। और लेखक वास्तव में यहाँ प्राचीन मनोविज्ञान का एक अंश प्रस्तुत करता है, क्योंकि वह अधर्मी व्यक्ति की मानसिकता की

एक तस्वीर बनाता है। वह व्यक्ति जो केवल अपने आनंद और हितों के लिए कार्य करता है, और इसलिए अपने लक्ष्यों को आगे बढ़ाने के लिए अपने पड़ोसी के साथ बुरा व्यवहार करता है, वह कैसे होता है? तो, लेखक हमें अधर्मी व्यक्ति की आंतरिक सोच का एक स्नेपशॉट देता है।

ऐसे लोग कहते हैं कि हमारा जीवन छोटा और दुखद है, और जब जीवन अपने अंत पर पहुँचता है तो कोई उपाय नहीं होता और कोई भी व्यक्ति अधोलोक से वापस नहीं आता। हमें दिया गया समय एक छाया के गुजरने के बराबर है, और मृत्यु से कोई वापसी नहीं है क्योंकि यह बंद है, और कोई भी वापस नहीं लौटता। तो आइए, हम मौजूद अच्छी चीजों का आनंद लें और युवावस्था की तरह सृजन का पूरा उपयोग करें।

हम में से कोई भी हमारी मौज-मस्ती में हिस्सा लेने से न चूके। हर जगह हम मौज-मस्ती के निशान छोड़ें क्योंकि यही हमारा हिस्सा है। यही हमारा भाग्य है।

हम धर्मी गरीब आदमी पर अत्याचार करें। हम विधवा को न छोड़ें और न ही बूढ़े के सफेद बालों का ख्याल रखें। लेकिन हमारी ताकत ही हमारा न्याय का नियम बने, क्योंकि जो कमजोर है वह बेकार साबित होता है।

इसलिए लेखक यह चित्र प्रस्तुत करता है कि यदि आप केवल इसी जीवन के लिए जी रहे हैं, तो आप गंभीर रूप से भटक सकते हैं। यदि आप मृत्यु की ओर देखते हैं और उसके आगे कुछ नहीं देखते हैं, तो आप सोचेंगे कि इस जीवन में जो परिस्थितियाँ, सुख और लाभ होंगे, वे ही सब कुछ हैं। और यह जीवन के प्रति आपके दृष्टिकोण को विकृत कर देगा।

यह दूसरों के साथ आपके रिश्तों को बिगाड़ देगा, और आप अपने पड़ोसी से खुद की तरह प्यार करने में असफल हो जाएँगे; बल्कि, आप अपने पड़ोसी का इस्तेमाल करेंगे और अपने पड़ोसी के साथ दुर्व्यवहार करेंगे ताकि जीवन के सुखों और इस दुनिया की अस्थायी दौलत तक अपनी पहुँच को और बढ़ा सकें। जैसे-जैसे यह हिस्सा आगे बढ़ता है, लेखक दिखाता है कि अधर्मी लोग धर्मी लोगों को निशाना बनाते हैं, यह सोचकर कि वे धर्मी लोगों के विश्वास के दावों को गलत साबित करना चाहते हैं, खास तौर पर धर्मी लोगों को शर्मनाक मौत देकर। यहाँ अधर्मी लोग, वास्तव में, धर्मत्यागी यहूदी हो सकते हैं और गैर-यहूदी व्यक्ति नहीं, क्योंकि लेखक सुझाव देता है कि वे धर्मी लोगों के खिलाफ़ कार्रवाई करें क्योंकि, उद्धरण, वह हमें दोषी ठहराता है क्योंकि हम कानून का पालन करने में विफल रहे हैं और हमें अपने पालन-पोषण से मुंह मोड़ने के लिए दोषी ठहराता है।

हमने अन्य ग्रंथों में देखा है कि प्रगतिशील यहूदी के बीच काफी तनाव था जो प्रमुख संस्कृति के नेटवर्क से पूरी तरह से आत्मसात करने और उसके फलों का आनंद लेने के लिए टोरा को पीछे छोड़ने के लिए तैयार था। और हम यहाँ उस गतिशीलता का एक और प्रतिबिंब देख सकते हैं, जहाँ यह वास्तव में धर्मत्यागी यहूदी हैं जो अपने पारंपरिक साथियों, अपने रूढ़िवादी, या जैसा कि वे कहेंगे, पिछड़े साथियों पर सबसे अधिक दबाव डालते हैं, जिनके जीवन को उनके सामने अपमानित किया जाता है। लेखक कहते हैं कि अधर्मी, वास्तव में इस जीवन में शक्ति के

अधिकार के दर्शन का पालन करके, कमजोर लोगों की कीमत पर धन प्राप्त करके फल-फूल सकते हैं।

लेकिन अंत में, परमेश्वर यह साबित कर देगा कि जीवन का वह तरीका पूरी तरह से मूर्खतापूर्ण है। वह अध्याय चार के अंत में धर्मी लोगों की मानसिकता के बारे में भी कुछ बताता है। अधर्मी लोगों के विपरीत, जो परमेश्वर के गुप्त उद्देश्यों को नहीं जानते थे, न ही पवित्रता की मजदूरी की आशा करते थे, न ही निर्दोष आत्माओं के लिए पुरस्कार को समझते थे, धर्मी व्यक्ति, जो कानून का पालन करने वाला व्यक्ति है, जो अपने प्रशिक्षण के मार्ग पर चलता है, जानता है कि, उद्धरण, परमेश्वर ने हमें अविनाशी के लिए बनाया है और हमें अपनी अनंतता की छवि में बनाया है।

और ईश्वर के हस्तक्षेप के प्रकाश में, धार्मिकता और अन्याय के परिणाम ठीक वही हैं जो व्यवस्थाविवरण और अन्य शास्त्रों में विश्वास करने के लिए प्रेरित करते हैं। धर्मी लोग इस जीवन में नुकसान उठा सकते हैं, लेकिन यह उन अमर आशीर्वादों की तुलना में बहुत कम है जो वे अपने गुणों के कारण इस जीवन के बाद प्राप्त करेंगे। अंत में, दूसरी ओर, अधर्मी लोग ईश्वर के सामने खड़े होंगे।

वे उस धर्मी व्यक्ति का प्रतिफल देखेंगे जिस पर उन्होंने अत्याचार किया है, और वे अपनी मूर्खता और टोरा-पालन करने वाले मनुष्य की बुद्धि को स्वीकार करेंगे जिसका उन्होंने तिरस्कार किया था। पाँच अध्यायों के इस आरंभिक भाग में, लेखक अमरता की आशा की एक सुंदर अभिव्यक्ति को आवाज़ देता है। यह भी अपोकलिफा से एक अंश है जिसने चर्चों में धार्मिक अनुभव पर काफी प्रभाव डाला है क्योंकि यह एक पाठ है जिसे कई ईसाई मंडलियों में अंतिम संस्कारों में अक्सर पढ़ा जाता है।

और इसलिए, हम पढ़ते हैं, धर्मी लोगों की आत्माएँ परमेश्वर के हाथ में हैं, और कोई भी पीड़ा उन्हें कभी नहीं छू पाएगी। मूर्खों की नज़र में, वे मर चुके लगते थे, और उनका जाना एक आपदा माना जाता था, और उनका हमसे दूर जाना उनका विनाश था। लेकिन वे शांति में हैं, क्योंकि हालाँकि दूसरों की नज़र में उन्हें दंडित किया गया था, उनकी आशा अमरता से भरी हुई है।

थोड़े से अनुशासित होने के बाद, वे बहुत अच्छा प्राप्त करेंगे क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें परखा और उन्हें अपने योग्य पाया। भट्टी में सोने की तरह, उसने उन्हें परखा, और एक बलिदान की तरह, उसने उन्हें स्वीकार किया। उस अंश में हमें जो संदर्भ मिलते हैं, उनमें से कई फ्रेम, जिनके माध्यम से लेखक उन परीक्षणों की व्याख्या करता है जिन्हें इस जीवन में धर्मी लोगों को सहना पड़ता है, पूरे नए नियम में फिर से दिखाई देते हैं, जो इस विशेष बिंदु पर सीधे निर्भरता का सुझाव नहीं देते हैं, बल्कि करीबी सांस्कृतिक प्रतिध्वनि का सुझाव देते हैं।

इसलिए, यह विचार कि ईश्वर धर्मी लोगों को शिक्षित या प्रशिक्षित या अनुशासित करता है, कि यह परीक्षण और जांच के माध्यम से एक प्रकार का दिव्य पालन-पोषण है, यहाँ उभरता है, साथ ही धर्मी व्यक्ति के मूल्य को साबित करने की छवि भी उभरती है जिस तरह से सोने का मूल्य तब परखा जाता है जब उसे भट्टी में पिघलाया जाता है, और इस प्रकार किसी भी अशुद्धता को अलग करके दिखाया जाता है। इस पाठ के दूसरे भाग में, हम बुद्धि पर लेखक के प्रवचन और, आंशिक

रूप से, बुद्धि के लिए सुलैमान की प्रार्थना का उसका पुनर्निर्माण पाते हैं। इस भाग में, लेखक अब गैर-यहूदी शासकों से आह्वान करता है, जिन्होंने ईश्वर से अपना अधिकार प्राप्त किया है, कि वे अपने अधिकार का उपयोग अपने स्वयं के बजाय ईश्वर के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए करें।

वह बुद्धि की उत्पत्ति, बुद्धि की प्रकृति और क्रियाकलापों का वर्णन करता है, जिनमें से कुछ स्पष्ट रूप से नीतिवचन 8 पर निर्भरता से उभर कर आते हैं, जहाँ बुद्धि को सृष्टि में ईश्वर के सहकर्मियों के रूप में जाना जाता है, वह कारीगर जो ईश्वर के बगल में है, प्रक्रिया में मदद करता है और ईश्वर के काम से प्रसन्न होता है, लेकिन कुछ महत्वपूर्ण तरीकों से उससे आगे भी जाता है। ईश्वर की छवि के प्रतिबिंब के रूप में बुद्धि के बारे में बात करना, ईश्वर की महिमा से निकलने वाली चमक, चमक, रोशनी के रूप में, और इस तरह दिव्यता के विस्तार के रूप में बुद्धि का और भी अधिक उत्कृष्ट व्यक्तित्व बनाता है। साथ ही, इस बारे में सोचना कि कैसे बुद्धि वह माध्यम है जिसके द्वारा लोग, धार्मिक लोग, ईश्वर से जुड़ते हैं, ईश्वर के मित्र बनते हैं, और सृष्टि को बनाए रखने में बुद्धि की भूमिका भी है, कि ईश्वर का कार्य सृष्टि के अंत के साथ समाप्त नहीं होता है, बल्कि ब्रह्मांड के क्रम के निरंतर रखरखाव और संरक्षण के साथ जारी रहता है, और तब बुद्धि ऐसा करने में ईश्वर का एजेंट है।

तीसरा भाग गैर-यहूदियों की आलोचना करता है कि वे एक सृष्टिकर्ता परमेश्वर को पहचानने, उसकी पूजा करने और उसकी आज्ञा मानने में विफल रहे, मुख्य रूप से लेखक ने कनानियों और, बहुत अधिक विस्तार से, निर्गमन की कहानी में मिस्त्रियों पर विचार किया। मिस्र पर आई विपत्तियों की कहानी को अध्याय 11 में सामने आने वाले दो सिद्धांतों को प्रदर्शित करने के लिए विस्तार से दोहराया गया है। पहला, कि परमेश्वर अपने लोगों को उन्हीं चीजों से आशीर्वाद देता है, जिनका उपयोग परमेश्वर अपने शत्रुओं को दंडित करने के लिए करता है, और दूसरा, कि व्यक्ति को उन्हीं चीजों से दंडित किया जाता है, जिनके माध्यम से वह पाप करता है।

ये दो थीसिस इन नौ अध्यायों में बार-बार आती रहती हैं क्योंकि लेखक विभिन्न विपत्तियों पर विचार करता है। अब, इस खंड के बीच में, लेखक गैर-यहूदी धार्मिक प्रथाओं की आलोचना करने वाले कई भ्रमणों में शामिल है और ऐसा करने से वह यिर्मयाह के पत्र या बेल और डैगन की कहानी की तुलना में अधिक परिष्कृत स्तर पर ऐसा करता है। बेशक, लेखक उन विशिष्ट तर्कों का उपयोग करता है जो हमें वहाँ भी मिले, लेकिन वह एक कदम आगे भी जाता है और गैर-यहूदी धार्मिक प्रथाओं को इसके बहुत ही मानवीय और समझने योग्य मूल का पुनर्निर्माण करके बदनाम करने की कोशिश करता है।

वास्तव में, गैर-यहूदी धर्म के बारे में उनकी व्याख्या यूहेमेरस द्वारा अपने आस-पास के पंथों के उदय के बारे में दी गई व्याख्या से बहुत मिलती-जुलती है। यूहेमेरस एक यूनानी दार्शनिक थे जो धर्म की उत्पत्ति के बारे में बात करते थे। इसलिए विजडम ऑफ सोलोमन के लेखक ने एक शोकग्रस्त पिता के बारे में कहानी बताई है जो खुद को जाने नहीं दे सकता और इसलिए वह अपने मृत बच्चे की एक छवि बनाता है।

और वह अपने मृत बच्चे से बात करता है, और वह अपने मृत बच्चे की छवि की देखभाल करता है, और इससे पहले कि आप यह जान पाएं, वह इस छवि के लिए प्रार्थना कर रहा है। और वह

अपने जीवित बच्चों को यह अभ्यास सिखाता है, ताकि वे अपने मृत भाई, चाचा, पूर्वज से बातचीत करना जारी रखें, और इसलिए लेखक इसे कहते हैं, जो एक पिता के शोक के रूप में शुरू हुआ वह एक अपरिवर्तनीय धार्मिक पंथ बन जाता है। और वह पंथ की उत्पत्ति के लिए एक राजनीतिक कहानी भी देखता है, और वह है एक राजा से दूर रहने वाले लोगों के साथ, जो दूर के राजा की चापलूसी करने और उससे संबंध बनाने का कोई तरीका खोजना चाहते हैं।

इसलिए, वह एक शिल्पकार की कहानी बताता है जो दूर के शासक की मूर्ति बनाता है और अपनी कला के सभी जादू से उसे एक बड़े आकार का बनाता है, और कैसे उसके आस-पास के लोग राजा की इस छवि को सम्मान देते हैं, दूर के राजा की चापलूसी करने के बारे में सोचते हैं। और इससे पहले कि आप इसे फिर से जानें, आपके पास एक मूर्ति के लिए पूर्ण-विकसित अनुष्ठान और बलिदान और प्रशंसा के भजन हैं जो वास्तव में सिर्फ एक इंसान है। यह वास्तव में हेलेनिस्टिक और रोमन दुनिया में शासक पंथ की उत्पत्ति का एक समझदार विवरण है, और इसमें कोई संदेह नहीं है कि लेखक के मन में वह विशेष घटना है, जो मिस्र और पूरे पूर्वी भूमध्यसागरीय क्षेत्र में बड़ी थी, यहूदिया को छोड़कर।

क्या इस लेखक के लिए गैर-यहूदियों के लिए कोई आशा है? लेखक प्रार्थना में परमेश्वर की पुष्टि करता है: आप हर उस चीज़ से प्यार करते हैं जो मौजूद है; आप अपनी बनाई किसी भी चीज़ से घृणा नहीं करते। लेखक इस तथ्य से इस तथ्य की व्याख्या करता है कि जब इब्रानियों के लोग वादा किए गए देश की दहलीज पर पहुँच रहे थे, तब परमेश्वर ने कनानियों को एक साथ नहीं मिटाया। इसके बजाय, परमेश्वर उन्हें धीरे-धीरे न्याय कर रहा था ताकि उन्हें अपने दिल और दिमाग को बदलने का मौका मिले, पश्चाताप करने का मौका मिले।

वैसे, यह निर्गमन में पाए जाने वाले स्पष्टीकरण से बहुत अलग है। निर्गमन में, परमेश्वर ने कनानियों को एक साथ नहीं मिटाया ताकि भूमि जंगली जानवरों से भर न जाए और बहुत लंबे समय तक बंजर न पड़े और असहनीय न हो जाए। और ये सभी समझदार इस्राएल-केंद्रित कारण, इस्राएल के लोग ऐसा करने के लिए केंद्रित कारण हैं, लेकिन यहाँ हमारे पास परमेश्वर के ऐसा करने के लिए एक बहुत ही अलग जातीय समूह-केंद्रित कारण है।

फिर भी, यह गैर-यहूदियों के बारे में जितना कहता है, उससे कहीं ज़्यादा परमेश्वर के बारे में कहता है क्योंकि लेखक यह दिखाता है कि वह यह उम्मीद नहीं करता कि गैर-यहूदी परमेश्वर के धैर्य से लाभ उठाएँगे। परमेश्वर ने कनानियों को धीरे-धीरे अनुशासित किया, उद्धरण, हालाँकि परमेश्वर अच्छी तरह जानता था कि वे जन्म से ही दुष्ट थे, कि उनका स्वाभाविक झुकाव बुराई की ओर था, और कि वे कभी अपना मन नहीं बदलेंगे। इसी तरह, परमेश्वर की चेतावनियाँ मिस्रियों को पश्चाताप के लिए प्रेरित नहीं कर सकीं।

बल्कि, फिर से उद्धृत करते हुए, जिस भाग्य के वे पूरी तरह से हकदार थे, उसने उन्हें इस अपरिहार्य निर्णय पर खींचा और उन्हें उन सभी चीज़ों के बारे में भूलने पर मजबूर कर दिया जो हाल ही में उनके साथ हुई थीं। यहीं पर लेखक को ज्येष्ठ पुत्र की मृत्यु, अंतिम विपत्ति याद आती है। इसलिए अंत में गैर-यहूदी राष्ट्रों के प्रति परमेश्वर की सहनशीलता इस विशेष लेखक की

अपेक्षाओं में गैर-यहूदी लोगों के लिए किसी वास्तविक आशा के बजाय परमेश्वर के धैर्यवान और दयालु चरित्र के बारे में अधिक कहती है।

अब हम एस्तेर की पुस्तक के यूनानी संस्करण की ओर मुड़ते हैं। यह जानकर थोड़ा आश्चर्य हो सकता है कि दानिय्येल की तरह ही, एस्तेर भी प्राचीन दुनिया में दो रूपों में प्रचलित थी: एक हिब्रू रूप, वह रूप जिससे प्रोटेस्टेंट ईसाई और यहूदी परिचित हैं, और एक लंबा ग्रीक रूप जो काफी अलग है। हिब्रू संस्करण से, ग्रीक एस्तेर में सामग्री के छह अतिरिक्त खंड शामिल हैं।

इन्हें अक्सर अपोक्रीफा के पुराने अनुवादों में अलग कर दिया जाता है, जैसे कि हाल ही में RSV में। और इसलिए, आप अपोक्रीफा में डैनियल के लिए अतिरिक्त जानकारी पाते हैं। लेकिन यह अजीब और भ्रामक दोनों है।

यह अजीब है क्योंकि तब आप नहीं जानते कि ये अतिरिक्त बातें कहानी में कहाँ फिट होती हैं। और यह भ्रामक भी है क्योंकि एस्तेर का बाकी हिस्सा हिब्रू की तुलना में ग्रीक में अलग है। कहानी का ग्रीक संस्करण, शुरू से अंत तक, इसमें ईश्वर का बहुत अधिक उल्लेख है।

प्रार्थना, मामलों में ईश्वर का सीधा हस्तक्षेप, ईश्वर के कानून का पालन करने के निर्देश, यह ध्यान दें कि मोर्दकै या एस्तेर जैसा कोई व्यक्ति वास्तव में ईश्वर के कानून का पालन कर रहा है, इत्यादि। इसलिए, पूरी किताब एक अलग किताब है। लेकिन निश्चित रूप से, जो सबसे अधिक ध्यान देने योग्य है, वह सामग्री के ये छह अतिरिक्त खंड हैं।

सबसे बाहरी दो जोड़, जिन्हें रचनात्मक रूप से जोड़ ए और जोड़ एफ कहा जाता है, पहला और छठा, एस्तेर की पूरी कहानी को एक रूपरेखा प्रदान करता है। पहला दर्शन, क्षमा करें, पहला संस्करण, मोर्दकै के दर्शन के बारे में बताता है, एक सपना जो मोर्दकै ने फारसी दरबार में देखा था। अंतिम जोड़ मोर्दकै के उस सपने या दर्शन की व्याख्या देता है।

फिर, दो अन्य जोड़ हैं जो केवल आदेशों का पूरा पाठ देते हैं। आदेश में उन कारणों की घोषणा की गई थी कि क्यों पूरे साम्राज्य में यहूदियों को मार दिया जाना था। और फिर वह आदेश जो उस आदेश को रद्द करता है, वह पिछला आदेश।

ये हैं परिवर्धन बी और ई। और फिर आपके पास कहानी के केंद्र में दो परिवर्धन हैं, परिवर्धन सी और डी। परिवर्धन सी एक प्रार्थना है, जो अपने आप में उल्लेखनीय है क्योंकि हिब्रू एस्तेर में कोई प्रार्थना नहीं है। मुझे नहीं लगता कि इसमें प्रार्थना शब्द का उल्लेख भी है। लेकिन ग्रीक एस्तेर में आपको वास्तव में मोर्दकै की प्रार्थना का पाठ मिलता है, और एस्तेर की प्रार्थना घटनाओं के उस मोड़ से ठीक पहले की है जब यहूदियों के लिए मुक्ति का काम शुरू होता है।

और फिर अंतिम जोड़, चौथा संस्करण, जोड़ डी, बीच में, मुझे लगता है, हिब्रू एस्तेर में सिर्फ पांच छंदों को एक बहुत ही पूर्ण दृश्य के साथ बदल देता है जिसमें एस्तेर राजा के सामने जाती है, और भगवान सीधे हस्तक्षेप करते हैं ताकि राजा के दिल को उसकी पत्नी के प्रति नरमी की ओर मोड़ सकें और उसकी याचिका को स्वीकार कर सकें। इसलिए, एस्तेर का ग्रीक संस्करण हिब्रू एस्तेर की तुलना में काफी अलग और बहुत अधिक धार्मिक, अत्यधिक धार्मिक पाठ है। अब, ये जोड़

हमें क्या देते हैं? वे हमें क्या दिखाते हैं जो हम हिब्रू एस्तेर से नहीं देखते हैं? खैर, एक जोड़, दूसरा संस्करण, हमें प्राचीन दुनिया में यहूदी-विरोधीवाद की एक झलक देता है।

यह हिब्रू एस्तेर की तुलना में यहूदी विरोधी पूर्वाग्रहों की उत्पत्ति को अधिक स्पष्ट रूप से समझाता है। और, बेशक, फारसी काल के बजाय हेलैनिस्टिक काल में यहूदी विरोधी पूर्वाग्रह की वास्तविकता को दर्शाता है। लेकिन हामान ने, अतिरिक्त बी में, हमें बताया कि यह यहूदियों के खिलाफ राजा का फरमान है; हामान ने हमें बताया कि दुनिया के सभी लोगों के बीच एक निश्चित शत्रुतापूर्ण समूह बिखरा हुआ है।

ये लोग अपने अजीबोगरीब कानूनों की वजह से हर देश से असहमत हैं। वे लगातार राजा के आदेशों की अनदेखी करते हैं, ताकि सरकार, भले ही हम अच्छी तरह से प्रबंधित करें, कभी सुरक्षित न रहे। हम देखते हैं कि यह राष्ट्र हर किसी के प्रति अपनी निरंतर शत्रुता में अकेला खड़ा है।

वे अपने कानून संहिता के कारण एक अजीब जीवन शैली का पालन करते हैं, और वे हमारे कार्यों के बारे में अच्छा नहीं सोचते हैं। वे सबसे बुरे काम करते हैं ताकि राज्य में शांति न रहे। अब, जाहिर है, इस आदेश में बहुत सारे साधारण विवाद हैं, लेकिन हम कुछ ऐसी चीजें देखते हैं जो यहूदी-विरोधी भावना के वास्तविक स्रोत हो सकते हैं, जिनमें से सबसे कम महत्वपूर्ण यहूदियों का अन्य लोगों से स्पष्ट अलगाव है।

आप जानते हैं, बैक्ट्रियन और फारसी और लाइकियन और फ्रीजियन, आप जानते हैं, यहूदियों ने जिस तरह से अपने समुदायों में किया, जिस तरह से उन्होंने पूरे डायस्पोरा में अपने जीवन को व्यवस्थित किया, उसी तरह से वे सभी अन्य लोगों के समूहों को छोड़कर एक दूसरे के साथ नहीं घूमते थे। इसलिए, जिस तरह से यहूदी लोग अपने डायस्पोरा में अपनी विशिष्ट पहचान को बनाए रखते हैं और प्रकट करते हैं, उसमें कुछ विशिष्टता है। कई गैर-यहूदी इसे यूनानियों द्वारा मिसोक्सेनिया, विदेशियों से घृणा, बाहरी लोगों से घृणा के चश्मे से देखते हैं।

तो, यहूदी दृष्टिकोण से, जो हो रहा है वह यह है कि हम टोरा के नियमों का पालन कर रहे हैं, शायद अक्षरशः भी। बाहरी व्यक्ति के दृष्टिकोण से, यहूदी गैर-यहूदियों के प्रति अपनी घृणा को प्रदर्शित कर रहे हैं। तो, यह बात है।

और यह भावना भी है कि उनके जीवन जीने का तरीका, वे नियम जिनके द्वारा वे अपने जीवन को नियंत्रित करते हैं, बिल्कुल अजीब हैं। वे अलग हैं। वे एक ऐसी जीवन शैली का पालन-पोषण करते हैं जो हम बाहरी लोगों के लिए समझ से परे है।

गैर-यहूदी लोग टोरा के आहार नियमों, खतने के अधिकार को नहीं समझ सकते। आप अपने साथ क्या करते हैं? या सब्बाथ का विचार, यह विचार कि आप सात दिनों में से सिर्फ एक दिन छुट्टी ले सकते हैं और बिल्कुल कुछ नहीं कर सकते। ये बातें प्राचीन दुनिया में समझ से परे हैं।

और इसलिए, हमें यहाँ इस बारे में थोड़ी जानकारी मिलती है, साथ ही साथ उस तरह के घातीय पूर्वाग्रह को भी जो उसी पर आरोपित किया जाता है। हमें इस अवधि में यहूदियों की मूर्त आध्यात्मिकता की तस्वीरें भी मिलती हैं। एस्तेर सिर्फ़ भगवान की मदद नहीं मांगती है।

वह अपने शाही वस्त्र उतार देती है और टाट, शोक के कपड़े और अंतिम संस्कार के कपड़े पहन लेती है। बेहतरीन मसालों के बजाय, वह अपने सिर और शरीर पर राख और गोबर लगाती है और अपनी याचिका करने से पहले खुद को भगवान के सामने विनम्र बनाती है। तो, यह है, आप जानते हैं, एक प्रोटेस्टेंट के रूप में प्रार्थना के जीवनकाल में, मैंने कभी भी प्रार्थना करने के लिए जानबूझकर कपड़े नहीं बदले।

और मैंने खुद को अपमानित करने के लिए कभी भी राख और गोबर से खुद को नहीं रंगा। लेकिन हम अपने शरीर के साथ जो करते हैं उसमें एक अलग तरह की पवित्रता है। और हम अपने शरीर के साथ जो करते हैं वह हमारी आत्माओं को मन की स्थिति में और भगवान के साथ इस मुठभेड़ को शुरू करने के लिए सही जगह पर रखता है।

हम एक संस्करण, संस्करण सी में भी पाते हैं, जिसमें कहानी में जातीय सीमाओं पर ध्यान दिया गया है। संभवतः, संस्करण सी के लेखक इस तथ्य से बहुत परेशान थे कि एस्तेर, एक यहूदी महिला, एक गैर-यहूदी से विवाहित थी और उसके साथ यौन संबंध बना रही थी और गैर-यहूदी और उसके दरबारियों और उसके दोस्तों और अन्य लोगों के साथ खा रही थी। उह, ऐसा नहीं हो सकता। यह वह नहीं है जो अच्छे यहूदी करते हैं।

यह वह नहीं हो सकता जो पुरीम के पर्व की नायिका ने किया। इसलिए, एस्तेर के यूनानी संस्करण में, उसे यह कहते हुए दिया गया है, मैं, आपकी दासी, हामान की मेज पर भोजन नहीं करती थी, न ही मैंने राजा के भोज का सम्मान किया या देवताओं को चढ़ाई गई शराब पी। इसलिए इस विचार का परिचय है कि एस्तेर ने राजा के दरबार के बीच में, यहाँ तक कि बीच में भी कोषेर रखा।

और उसने खुद को ऐसी किसी भी चीज़ से दूर रखा जो उस गैर-यहूदी शासक की मूर्तिपूजा की गंध देती हो जिससे उसकी शादी हुई थी। और इससे भी बेहतर, मैं इस खतनारहित राजा या वास्तव में किसी भी विदेशी के साथ बिस्तर साझा करने से घृणा करता हूँ। अब, हम इस तथ्य की मदद नहीं कर सकते कि एस्तेर को राजा से शादी करनी थी, लेकिन उसे यह पसंद नहीं था।

और इसलिए, इस संस्करण में, वह उस बात के लिए अपनी घृणा व्यक्त करती है जिसे लेखक घृणित मानता है। विवाह के द्वारा यहूदी और गैर-यहूदी का मिश्रण। संयोग से, संस्करण बी, उस आदेश के विरुद्ध यह एक दिलचस्प बात है।

यहूदी वास्तव में इस अवधि में अपनी विशिष्ट प्रथाओं, अपनी विशिष्ट पहचान और अपने आस-पास के अन्यजातियों से अलग रहने में रुचि रखते थे। एस्तेर का यूनानी संस्करण भी एस्तेर की कहानी का उपयोग ईश्वर के बारे में जागरूकता को बढ़ावा देने और यहूदियों की विशिष्ट प्रथाओं के पालन को बढ़ावा देने के लिए करने में बहुत अधिक रुचि रखता है, भले ही वे प्रथाएँ पूर्वाग्रह और शत्रुता को जन्म देती हों। यहूदियों और अन्य राष्ट्रों के बीच सीमाओं का यह बढ़ना न केवल

संस्करण बी और सी में देखा जाता है, जिन्हें हमने अभी देखा है, बल्कि लॉट की पुनर्व्याख्या में भी, पुरीम जिसने एस्तेर की पुस्तक से निकलने वाले त्योहार को नाम दिया।

एस्तेर के हिब्रू संस्करण में, आप जानते हैं, चिट्ठियाँ बस वही हैं जो यहूदियों को मारने के लिए दिन निर्धारित करने के लिए डाली गई थीं। लेकिन संस्करण एफ में, एक दूसरी व्याख्या जोड़ी गई है। जब मोर्देकै अपने सपने पर विचार करता है जिसमें उसने दो ड्रेगन को युद्ध के लिए आगे बढ़ते और एक नदी को बहते हुए देखा और कुछ अन्य अजीबोगरीब विवरण जो इस समय मेरे दिमाग से निकल गए, तो वह समझता है कि व्याख्या उन दो चिट्ठियों से संबंधित है जो परमेश्वर ने डाली हैं, एक यहूदियों के लिए और एक राष्ट्रों के लिए।

और परमेश्वर के पसंदीदा राष्ट्र के उद्धार का समय आ गया। तो, यह विचार कि यहाँ भाग्य ही भाग्य है, दो नियति हैं जिन्हें परमेश्वर ने निर्धारित किया है। और यहाँ तक कि यह भी अपने आप में अन्यजातियों को उनके भाग्य से यहूदियों और उनके भाग्य से अलग करता है।

हम थर्ड मैकाबीज़ नामक पुस्तक पर आते हैं, और मैं इसे यहाँ इसलिए रख रहा हूँ क्योंकि थर्ड मैकाबीज़ की गतिशीलता ग्रीक एस्तेर की गतिशीलता से बहुत मिलती-जुलती है। वास्तव में, कुछ बिंदुओं पर कुछ करीबी मौखिक समानताएँ भी हैं, जो यह सुझाव दे सकती हैं कि थर्ड मैकाबीज़ के लेखक, अन्य स्रोतों के अलावा, एस्तेर या ग्रीक एस्तेर को जानते थे, अधिक संभवतः ग्रीक एस्तेर को, और उन्होंने जो कुछ पढ़ा उससे खुद को आंशिक रूप से प्रेरित होने दिया। लेकिन थर्ड मैकाबीज़, जूडिथ की तरह, टोबिट की तरह, ऐतिहासिक कथा साहित्य का एक और काम है।

यह बताता है कि डायस्पोरा में क्या हो सकता है, यह देखते हुए कि एंटीओकस चतुर्थ के तहत यरूशलेम और यहूदिया में क्या हुआ था। शीर्षक के बारे में बस एक शब्द। इसे थर्ड मैकाबीज़ कहा जाता है।

इसका मैकाबीज़ से कोई लेना-देना नहीं है। इसका पहले और दूसरे मैकाबीज़ की कहानी से कोई लेना-देना नहीं है। और वास्तव में, प्राचीन दुनिया में, इसका उल्लेख किया जाता है, और मुझे याद है कि कहाँ, लेकिन इसे टॉलेमैका के रूप में संदर्भित किया जाता है।

यह एक ग्रीक शब्द है, एक विशेषण शब्द है, जिसका अर्थ है टॉलेमीज़ से संबंधित चीजें। इसलिए, हम सेल्यूसिडस के तहत यरूशलेम और उसकी राजनीतिक स्थिति को नहीं देख रहे हैं। हम मिस्र में प्रवासी यहूदियों और टॉलेमीज़ के तहत उनकी स्थिति को देख रहे हैं।

और इसमें संबंध के बिंदु भी हैं। थर्ड मैकाबीज़ का कथानक सेकंड मैकाबीज़ के कथानक से बहुत मिलता-जुलता है। लेकिन यह सिर्फ कथानक की समानताएँ हैं।

यह कहानी का सिलसिला नहीं है। यह वही कहानी नहीं है। सच कहूँ तो यह किसी भी तरह से उस कहानी से संबंधित नहीं है, यह गाथा की निरंतरता की तरह है।

यह संभवतः मिस्र में लिखा गया है, जहाँ इसकी पृष्ठभूमि भी है। लगभग निश्चित रूप से यह ग्रीक भाषा में लिखा गया है। और शायद यह ऑगस्टस के शासनकाल के शुरुआती दौर से आता है।

कहानी में उभरने वाली चिंताओं में से एक है लाओग्राफिया, जो एक ग्रीक शब्द है जिसका अर्थ है लोगों का नामांकन। ऑगस्टस के काल में कुछ ऐसा जो स्पष्ट रूप से मिस्र में ग्रीक नागरिकों को स्वदेशी मिस्र की आबादी से अलग करता था। मिस्र के ग्रीक नागरिकों और स्वदेशी मिस्र की आबादी के बीच स्थिति, विशेषाधिकारों और अधिकारों में बहुत अंतर था।

और वास्तव में, ऑगस्टस के शासनकाल के बाद से, मिस्र में यहूदी बहुत चाहते थे कि उनकी स्थिति मिस्र के यूनानी नागरिक के रूप में स्पष्ट की जाए, बजाय इसके कि उन्हें स्वदेशी गैर-यूनानी मिस्र की आबादी के दर्जे में रखा जाए। कहानी, जैसा कि हम तक पहुँची है, अधूरी है। शुरुआती दृश्य या दृश्य स्पष्ट रूप से गायब हैं।

यह सिर्फ चीजों के बीच से शुरू नहीं होता। यह वाक्य के बीच से शुरू होता है। इसलिए, यह एक दोषपूर्ण पांडुलिपि है।

और इसलिए, उस पांडुलिपि की हर प्रति पराजित हो जाती है। जैसा कि यह है, कहानी राफिया की लड़ाई से शुरू होती है, जो फिलिस्तीन में बहुत दूर दक्षिण में स्थित है, मूल रूप से इज़राइल और मिस्र के बीच की सीमा पर। यह उन कई लड़ाइयों में से एक थी जिसमें एंटीओकस III ने इज़राइल पर नियंत्रण पाने के लिए टॉलेमी से लड़ाई लड़ी थी।

यह सब बकवास है, यह सिकंदर महान की मृत्यु के बाद हुआ समझौता था, और टॉलेमी हमें इसे लेने नहीं देंगे। इसलिए, हम इसे किसी दिन लेने जा रहे हैं। लेकिन एंटीओकस ने 218 ईसा पूर्व में राफिया की लड़ाई में इसे नहीं लिया।

पैनियस की लड़ाई के लिए 20 साल और इंतजार करना होगा। वैसे भी, इसकी शुरुआत राफिया की लड़ाई में टॉलेमी की जीत से होती है, जिसमें उसने एंटीओकस को सफलतापूर्वक पीछे धकेल दिया। उस जीत के बाद, टॉलेमी ने फैसला किया कि वह सेल्यूसिड सेनाओं के आक्रमण के बाद अपने लोगों को प्रोत्साहित करने के लिए अपने साम्राज्य की सभी भूमि का दौरा करेगा।

और यह तब तक बढ़िया चल रहा है जब तक वह यरूशलेम नहीं आ जाता। जब वह यरूशलेम आता है, तो वह वहाँ भी वही करना चाहता है जो उसने हर दूसरे शहर में किया है। वह स्थानीय पवित्र स्थान का सम्मान करना चाहता है।

और स्थानीय अभयारण्य का सम्मान करके, वह स्थानीय अभयारण्य में जाने की उम्मीद करता है। क्योंकि वह पुरातत्व या वास्तुकला का प्रशंसक है। वह चीजों के अंदरूनी कामकाज को देखना पसंद करता है।

वह इस बात पर जोर देता है कि राजा होने के नाते उसे ऐसा करने में सक्षम होना चाहिए, भले ही कोई और ऐसा न कर पाए। लेकिन यहीं पर 2 मैकाबीज़ के साथ सबसे करीबी समानता दिखाई देती है। 2 मैकाबीज़ में हेलियोडोरस की तरह, टॉलेमी को अदृश्य हाथों से पीटा जाता है और वह

अपनी प्रतीकात्मक पूंछ को पैरों के बीच दबाए हुए मिस्र लौटता है, वहाँ यहूदी आबादी के खिलाफ़ धमकियाँ देता है।

इसलिए, मिस्र लौटने के बाद, वह अपने साम्राज्य के बीच यहूदी लोगों की समस्या को हल करने की कोशिश करता है। और टॉलेमी के दृष्टिकोण से, वह जो करने जा रहा है वह वास्तव में एक उपहार है। वह अलेक्जेंड्रिया और पूरे मिस्र में यहूदियों को एक बड़ा सम्मान दे रहा है।

एलेक्जेंडरियन नागरिकता, ग्रीक नागरिकता, एलेक्जेंडरियन धर्म में भाग लेने की कीमत पर। वैसे, यह बहसों को भी दर्शाता है, पहली शताब्दी ईस्वी के दौरान ग्रीक शहरों में यहूदियों और उनके गैर-यहूदी पड़ोसियों के बीच वास्तविक जीवन की बहसें, जहाँ ग्रीक नागरिक कहते हैं कि यदि आप हमारे साथ साथी नागरिक बनना चाहते हैं, तो आपको अपने साथी नागरिकों के साथ उनके धर्म में हिस्सा लेना होगा। उन्होंने इसे काफी स्पष्ट किया।

अगर आप हमारे देवताओं का अपमान करते रहेंगे तो आप हमारे साथी नागरिक नहीं रह सकते। इसलिए, टॉलेमी ने यह प्रस्ताव रखा। लेकिन उसने कहा कि अगर वे इस प्रस्ताव को अस्वीकार करते हैं, तो उन्हें पंजीकृत होना होगा।

लाओग्राफिया शब्द का संदर्भ है। उन्हें पंजीकृत किया जाना है और गुलामी में डाल दिया जाना है। केवल कुछ सौ यहूदी टॉलेमी के प्रस्ताव को स्वीकार करते हैं।

कई मिलियन में से 300. बाकी लोग प्रस्ताव को अस्वीकार कर देते हैं और वे उन कुछ सौ यहूदियों को दुश्मन मानते हैं जो राजा के पक्ष में हैं। इससे टॉलेमी को यहूदियों के अंतर्निहित द्वेष का एहसास होता है।

और इसलिए, उसने एक और योजना बनाई। गुलामी की बात भूल जाओ। हम सभी यहूदियों को पकड़ लेंगे और उन्हें मार डालेंगे।

हिप्पोड्रोम में। इसलिए, यहूदियों को पूरे मिस्र से हिप्पोड्रोम में लाया जाता है, जो अलेक्जेंड्रिया के बाहर रथ दौड़ स्टेडियम है। और वहाँ वे युद्ध के हाथियों द्वारा कुचले जाने की प्रतीक्षा करते हैं, जो टैंक डिवीजन के प्राचीन समकक्ष हैं।

तीन बार, इन हाथियों को कवच पहनाया जाता है और उन्हें लोबान और अन्य स्वादिष्ट चीजों के साथ शराब पिलाकर उन्माद में उकसाया जाता है। और तीन बार, भगवान राजा की योजना को विफल करने के लिए हस्तक्षेप करते हैं। अंत में, स्वर्गदूत फिर से हस्तक्षेप करते हैं और हाथियों को डराकर पीछे मुड़ने और उनके रखवालों और उन सैनिकों को कुचलने के लिए मजबूर करते हैं जो उन्हें यहूदी बंदियों की ओर ले जाने की कोशिश कर रहे हैं।

राजा यह देखता है, और अपने किए पर बहुत पश्चाताप करता है। और वह यहूदियों को माफ़ी मांगकर घर वापस भेज देता है और रास्ते में 14 दिनों तक दावतें देता है, ताकि वे पहले उन लोगों से बदला ले सकें जो अपने ही लोगों के गद्दार साबित हुए थे। 300 यहूदी जिन्होंने एलेक्जेंड्रिया की नागरिकता स्वीकार कर ली थी।

इस कहानी में, हमारे पास एक और गवाह है, जो गैर-यहूदी यहूदी-विरोधी भावना का एक शानदार गवाह है। उदाहरण के लिए, कहानी की शुरुआत में, तीसरे अध्याय में, टॉलेमी, मैं इसे वापस लेता हूँ, कथाकार अपने कुछ पड़ोसियों के बीच यहूदी लोगों के खिलाफ पूर्वाग्रह के बारे में बात कर रहा है। और इसलिए, वह लिखता है, जबकि वे ईश्वर की पूजा करते थे और ईश्वर के कानून के अनुसार अपना जीवन जीते थे, उन्होंने भोजन के मामले में खुद को अलग रखा।

इस कारण से, वे कुछ लोगों के प्रति शत्रुतापूर्ण प्रतीत हुए। यद्यपि राष्ट्र, अर्थात् मिस्र के लिए यहूदियों के अच्छे कार्यों के बारे में सभी द्वारा सामान्य रूप से चर्चा की जाती थी, अन्य जातियों के लोगों ने इन पर ध्यान नहीं दिया। इसके बजाय, वे पूजा और आहार में अंतर पर जोर देते रहे और दावा किया कि यहूदी लोग न तो राजा के प्रति और न ही अधिकारियों के प्रति वफादार थे, बल्कि वे शत्रुतापूर्ण थे और शाही प्रशासन के सख्त विरोधी थे।

और इसलिए, उन्होंने यहूदियों पर महत्वपूर्ण दोष लगाया। अब फिर से, ग्रीक एस्तेर के परिशिष्ट बी की तरह, इस पाठ में, हम देखते हैं कि यहूदी लोगों के अपने विशेष कानून का पालन करने से उन्हें अपने पड़ोसियों के साथ परेशानी का सामना करना पड़ा क्योंकि इसने सबसे पहले यहूदियों और गैर-यहूदियों के बीच के अंतर पर जोर दिया। यहूदी हमेशा एक और केवल एक ईश्वर की पूजा करेंगे।

हममें से बाकी लोग हमेशा कई देवताओं की पूजा करेंगे, और हम कभी भी किसी दूसरे समूह से यह नहीं कहेंगे कि तुम्हारा भगवान तो है ही नहीं, जैसा कि यहूदी सदियों से कहते आए हैं। और अपने खान-पान के तौर-तरीकों, खाद्य पदार्थों के मामले में वे खुद को अलग रखते हैं। इसका एक और सबूत यह है कि यहूदी समुदाय अपने-अपने बाजारों के इर्द-गिर्द खुद को जिस तरह से संगठित करते हैं, वह समस्याग्रस्त प्रकृति का है, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि उन्हें सही जानवरों का मांस मिल रहा है, सही तरीके से वध किया जा रहा है, ताकि वे कश्त को बनाए रख सकें, अपने पूर्वजों के कानून के आहार संबंधी नियमों को बनाए रख सकें।

संयोग से, यह एक सामाजिक इंजीनियरिंग उपकरण के रूप में टोरा की प्रतिभा का एक अद्भुत प्रमाण है। इसे बिल्कुल वैसा ही करने के लिए बनाया गया है जैसा इसे करने के लिए बनाया गया था। यहूदियों को प्रभु के लिए पवित्र बनाए रखें।

उन्हें अपने आस-पास के देशों के साथ घुलने-मिलने और घुलने-मिलने से रोकें। अब, हमें तनाव के दूसरे समूह, यहूदी समुदाय के भीतर तनाव का भी गवाह मिलता है, जिसे हमने पहले ही सुलैमान की बुद्धि, अध्याय एक से पाँच के संबंध में नोट किया है। और इसलिए, हम तीसरे मैकाबीज़ दो में पढ़ते हैं।

अब, कुछ यहूदी, शहर के धर्म के लिए उठाए जाने वाले कदमों से घृणा करने का दिखावा करते हुए, राजा के साथ अपने सभी संबंधों के माध्यम से महान प्रसिद्धि में हिस्सा लेने के लिए खुद को आसानी से समर्पित कर देते हैं। इसका मतलब यह है कि कुछ यहूदी जो धर्मत्यागी बन गए, हालाँकि उन्होंने दिखावा किया कि यह वास्तव में एक बड़ी बात थी और उन्हें ऐसा करने से

नफरत थी, फिर भी वे एलेक्जेंड्रिया की नागरिकता प्राप्त करने के अवसर के लिए खुश थे। लेकिन सम्माननीय बहुमत मजबूत था और अपने धर्म से विमुख नहीं हुआ।

उन्होंने अपनी जान के बदले रिश्त का सहारा लेकर खुद को पंजीकृत होने से बचाने की बहादुरी से कोशिश की। उन्हें मदद मिलने की उम्मीद बनी रही और वे उन यहूदियों को घृणा की दृष्टि से देखते थे जिन्होंने उन्हें छोड़ दिया था, यानी धर्मत्यागी। वे उन लोगों को यहूदी राष्ट्र का दुश्मन मानते थे और अब उनके साथ नहीं जुड़ते थे या उनकी सहायता नहीं करते थे।

इसलिए, यहूदी जीवन शैली से धर्मत्याग के तथ्य ने यहूदी समुदाय के भीतर शर्मिंदगी की तकनीकों का उपयोग करने का नेतृत्व किया, क्योंकि धर्मनिष्ठ यहूदियों ने धर्मत्यागी यहूदियों को यह संदेश भेजा कि वे किसी भी तरह से, जो वे कर सकते हैं, यह बता सकते हैं कि आप जो कर रहे हैं वह अस्वीकार्य है। यह ईश्वर की नज़र में और हमारी नज़र में अपमानजनक है। और जब तक आप ऐसा करने जा रहे हैं, हम आपका कोई हिस्सा नहीं चाहते हैं।

और फिर, जैसा कि मैंने सारांश में उल्लेख किया है, उनके उद्धार के बाद, यहूदियों ने, उद्धारण, राजा से अनुरोध किया कि वे उन यहूदियों को दण्डित करें जो स्वेच्छा से पवित्र ईश्वर और ईश्वर के कानून से विमुख हो गए थे। उन्होंने जोर देकर कहा कि जो लोग पेट की खातिर, अपनी खाल बचाने के लिए ईश्वरीय कानूनों को तोड़ते हैं, वे राजा की सरकार के अधीन कभी भी विश्वसनीय प्रजा नहीं हो सकते। राजा ने उन्हें अपने राज्य के भीतर हर जगह ईश्वर के कानून का उल्लंघन करने वालों को पूरी तरह से नष्ट करने की पूरी छूट दी, ताकि वे सार्वजनिक रूप से उनका उदाहरण बन सकें।

उस दिन, उन्होंने 300 से ज़्यादा लोगों को मार डाला, एक ऐसा दिन जिसे उन्होंने एक खुशी के त्यौहार के रूप में भी मनाया क्योंकि उन्होंने विद्रोहियों को वश में कर लिया था। तो, शर्मनाक तकनीकें नौवें स्तर तक पहुँच गईं। अब, धर्मत्यागी यहूदियों को इस तरह से मार दिया जाता है कि वे बाकी यहूदी समुदाय के लिए परमेश्वर के कानून की अवज्ञा करने के नुकसान का सार्वजनिक उदाहरण बन जाते हैं।

इस कहानी के अंत में एक अजीब तरह की इच्छा-पूर्ति है, कि जो लोग वाचा को पीछे छोड़ देते हैं, वे वाचा के पालनकर्ता, टोरा के पालनकर्ता यहूदी समुदाय के हाथों में पड़ सकते हैं, ताकि उन्हें उचित रूप से अनुशासित किया जा सके। अब, संभावित रूप से अधिक उत्थानकारी नोट पर, तीसरा मैकाबीज़ हमें दूसरे मंदिर काल की प्रार्थना में कई खिड़कियाँ प्रदान करता है। इस पाठ में हमारे पास दो उल्लेखनीय प्रार्थनाएँ हैं।

पहला अध्याय तीसरे में महायाजक साइमन द्वारा लिखा गया है, और दूसरा एलिज़र द्वारा लिखा गया है। इस कहानी के सभी नायकों का नाम एलिज़र है। एलिज़र, जो यरूशलेम में रहता था, एक बूढ़ा पुजारी था जो हिप्पोड्रोम में मुक्ति के लिए प्रार्थना करता था।

अध्याय तीन में साइमन की प्रार्थना ईश्वर द्वारा उन लोगों, उन समूहों का न्याय करने के शास्त्रों के अभिलेखों पर आधारित है जो ईश्वर के मानकों, ईश्वर के लोगों या ईश्वर के चुने हुए शहर के प्रति अहंकारी व्यवहार करते हैं। वह दिग्गजों की कहानी को याद करता है, यानी, AWOL स्वर्गदूतों

और उनकी मानव महिला भागीदारों की अपवित्र संकर संतानें, और सदोम और फिरौन के उदाहरण। शास्त्रों के अभिलेखों से इन ऐतिहासिक उदाहरणों के आधार पर, वह ईश्वर से एक बार फिर अभिमानी, अर्थात् टॉलेमी के खिलाफ हस्तक्षेप करने और मंदिर की पवित्रता की रक्षा करने के लिए कहता है।

ऐतिहासिक मिसाल, ईश्वर ने हमारे लिए ऐतिहासिक रूप से क्या किया है, कहानी के अंत में एलीएजर की प्रार्थना में फिर से प्रार्थना के आधार के रूप में उभरता है, जब वह युद्ध के हाथियों से खतरे में पड़ने पर ईश्वर के लोगों को विलुप्त होने से बचाने के लिए पूरे लोगों की ओर से प्रार्थना करता है। और वह लाल सागर में फिरौन के उदाहरणों को याद करता है, कि कैसे ईश्वर ने वहां लोगों को बचाया। यरूशलेम को सन्हेरीब से छुड़ाना और बेबीलोन में नबूकदनेस्सर से वफादार चार लोगों, दानिय्येल और तीन युवकों को छुड़ाना।

और एक बार फिर, प्रार्थना का आधार यह है कि जैसा कि आपने अतीत में किया है जब आपके लोगों को एक अभिमानी विदेशी द्वारा खतरे में डाला गया था, कृपया हमारे वर्तमान संकट में हस्तक्षेप करने के लिए फिर से कार्य करें। तो टोबिट में प्रार्थना और उसी पुस्तक में पहले की प्रार्थना के साथ, ये पवित्र अभिलेखों, पवित्र शास्त्रों से ईश्वर के बारे में जो कुछ भी जाना जा सकता है, उसके अनुरूप प्रार्थना करने का उदाहरण देते हैं, ईश्वर से कुछ ऐसा करने की अपेक्षा करने से बचने की कोशिश करते हैं जो ईश्वर के चरित्र के बाहर हो या ईश्वर ने अपने चरित्र और इरादों और पवित्र परंपरा में जो होना चाहा है, उसके संबंध में चरित्र से बाहर हो। यह पैटर्न एक बार फिर यहूदी और ईसाई अभ्यास में लंबे समय तक जारी रहता है।

उदाहरण के लिए, प्रार्थनाओं के चक्र को देखें, जिसे कैथोलिक, एंग्लिकन और लूथरन परंपराओं में सामूहिक प्रार्थना कहा जाता है। तीसरे मैकाबीज़ की कहानी कुछ अन्य चीजें भी हासिल करती है। यह मिस्र की यहूदी आबादी और यरूशलेम की यहूदी आबादी और उसके मंदिर के बीच संबंध की पुष्टि करती है।

इसका मतलब यह है कि प्रवासी यहूदी समुदाय यहूदी मंदिर से उतना ही जुड़ा हुआ है जितना कि यरुशलम यहूदी समुदाय। मंदिर से हमारी दूरी का मतलब यह नहीं है कि हम पवित्र स्थान के भाग्य में भागीदारी से दूर हैं। यह इस तथ्य से पता चलता है कि टॉलेमी को यहूदियों के खिलाफ कार्रवाई करने की खुजली शुरू हो जाती है क्योंकि उसके साथ यरुशलम मंदिर में कुछ होता है।

कहानी आगे बढ़ने पर यह एक पुष्टि भी प्रदान करती है। और जैसा कि परमेश्वर वास्तव में मिस्र के यहूदियों को एक अद्भुत तरीके से बचाता है, यह पुष्टि करता है कि परमेश्वर सुनता है और परमेश्वर अपने लोगों को प्रवासी सेटिंग में बचाता है, ठीक वैसे ही जैसे परमेश्वर यरूशलेम में करता है। यह एक कहानी हो सकती है, या कहानी का एक हिस्सा यरूशलेम से शुरू किए गए प्रवासी यहूदियों की आलोचनाओं के जवाब में बताया गया है।

उदाहरण के लिए, द्वितीय मैकाबीज़ के लिए अब जो पत्र लिखे गए हैं, उनमें से एक में, पत्र के यरूशलेम-स्थित लेखक बस यह मान लेते हैं कि वे जिन प्रवासी यहूदियों को लिख रहे हैं, वे पाप में हैं क्योंकि वे अभी भी निर्वासन में हैं। और जबकि, हाँ, निर्वासन अभिशाप का परिणाम है,

व्यवस्थाविवरण के अभिशाप का, इसका यह अर्थ नहीं है कि ईश्वर हमसे अलग हो गया है।
आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

और यह कहानी दूसरे मैकाबीज़ की कहानी को दोहराती है। यह तथ्य कि ईश्वर हमारे उतने ही
करीब हैं, जितने कि वे वास्तव में आपके।